ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 11 कुल पृष्ठ-8 6 से 12 दिसम्बर, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 मा.शी.कृ.-07

आर्य समाज संजयनगर, गाजियाबाद के तत्वावधान में आयोजित हुआ चतुर्वेदीय पारायण यज्ञ एवं संगीतमयी रामकथा का भव्य कार्यक्रम

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्यअतिथि तथा पं. माया प्रकाश त्यागी जी विशिष्ट अतिथि के रूप में हुए सम्मिलित

आर्य समाज संजयनगर, गाजियाबाद के तत्वावधान में आयोजित चतुर्वेदीय पारायण यज्ञ एवं संगीतमयी रामकथा के समापन एवं पूर्णाहुति के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्यअतिथि के रूप में तथा सभा कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए।

यज्ञ के ब्रह्मा प्रसिद्ध युवा विद्वान डॉ. योगेश शास्त्री डी–लिट् ने अत्यन्त विद्वतापूर्ण तरीके से यज्ञ को सम्पन्न कराया। उनके साथ अन्य आचार्यगण भी विभिन्न वेदियों पर आचार्य पद को सुशोभित करते हुए यज्ञ के विशेष सहयोगी रहे। प्रतिदिन प्रातः 8 से 11 बजे तक यज्ञ का कार्यक्रम चलता रहा। छः वेदियों पर अलग–अलग वेद पाठ के द्वारा आहुतियाँ प्रदान की जाती रहीं। यज्ञ के उपरान्त डॉ. योगेश शास्त्री के प्रभावशाली प्रवचनों की पूरे गाजियाबाद में धूम मची रही। प्रतिदिन सायंकाल संगीतमयी रामकथा का कार्यक्रम भी विशेष आकर्षण का माध्यम बना रहा और इसी के परिणामस्वरूप पूर्णाहुति के दिन हजारों लोग आहुति देने और व्याख्यान सुनने के लिए उमड़ पड़े।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजक आर्य समाज संजय नगर के प्रधान श्री सेवाराम त्यागी ने किया। उनके साथ संयोजक के रूप में श्री अरुण त्यागी तथा सहसंयोजक के रूप में श्री श्रीपाल त्यागी एवं श्री मुकेश गलहेता, श्री अजय दिनकरपुर मंत्री, श्री प्रेमदत्त त्यागी कोषाध्यक्ष, श्री प्रमोद त्यागी सहकोषाध्यक्ष एवं बाबा विद्यानन्द संरक्षक के रूप में जुड़े हुए थे। इन सभी सहयोगियों के पुरुषार्थ से कार्यक्रम अत्यन्त प्रशंसनीय एवं सराहनीय रहा।

समापन कार्यक्रम में कन्या गुरुकुल सासनी की आचार्या डॉ. पवित्रा विद्यालंकार, श्री अजीत पाल विधायक मुरादनगर भी पधारे हुए थे। उनके अतिरिक्त जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान मा. ज्ञानेन्द्र आर्य, श्री रामनिवास शास्त्री, श्री जयपाल सिंह त्यागी, श्री प्रवीण आर्य आदि भी विशेष रूप से कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

इस चतुर्वेदीय पारायण यज्ञ से प्रेरणा लेकर कई परिवारों ने दैनिक यज्ञ करने का संकल्प लिया। रामकथा वेद मनीषी श्री वीरेन्द्र शास्त्री जी द्वारा की गई। जिसे लोगों ने अत्यधिक पसन्द किया। यह रामकथा मर्यादा पुरुषोत्तम राम के वैदिक स्वरूप को प्रस्तुत करने वाली थी। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. योगेश शास्त्री के प्रवचन, आशीर्वाद तथा यजमानों को संकल्प दिलाने के बाद डॉ. पवित्रा विद्यालंकार, पं. माया प्रकाश त्यागी तथा सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के भी सारगर्भित व्याख्यान हुए। श्री सेवाराम त्यागी ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। यज्ञ में गुरुकुल बरनावा तथा कन्या गुरुकुल सासनी के ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियों द्वारा सस्वर वेदपाठ किया गया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

मनुर्भव

– आचार्य पंडित रमेश विद्यावाचस्पति डी.ए.वी. चंडीगढ़

'मनुर्भव' शब्द आश्चर्य एवं प्रश्न से भरा शब्द है इस शब्द में आश्चर्य तो इसलिए है कि मनुष्य को मनुष्य बनने का उपदेश है, भला क्यों? क्या हम सब मानव कहलाने वाले प्राणी मानव नहीं है। तो फिर क्या हैं और फिर 'मनुर्भव' का उपदेश क्यों? क्या कहीं ऐसा भी सुनने को मिला है कि मानवेतर जितने भी प्राणी हैं, उन्हें अपनी ही सत्ता में बने रहने का उपदेश दिया गया हो उदाहरण के लिए गधे को गधा बनने का, कुत्ते को कुत्ता बनने का, गाय को गाय बनाने का आदि–आदि। फिर मानव जाति के लिए ऐसा भेदभाव क्यों? यह भी उपदेश किसी शरीरधारी प्राणी का नहीं है बल्कि परमपिता परमात्मा का वैदिक ऋचा के माध्यम से दिया गया है। यहां ऋग्वेद का एक मंत्र द्रष्टव्य है –

ओं तन्तु तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।

अनुल्बणं वमत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।।

इस मंत्र के अंतिम पंक्ति में 'मनुर्भव; तथा 'जनया दैव्य जनम्' मानव जीवन का लक्ष्य बताया गया है मंत्र के शेष भाग में 'मनुर्भव' तथा 'जनया' दैव्यं जनम्' के लिए साधन बताए गए हैं। तभी तो कहा जाता है कि परमात्मा की वाणी अर्थात वेदों की ऋचाएँ अपने आप में पूर्ण हैं। भला बिना साधन के साध्य की कल्पना कैसे की जा सकती है। मंत्रानुरूप साध्य है 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बन तथा 'जनया' दैव्यं जनम्' और दिव्यगुणयुक्त संतति को जन्म दें। सच तो यह है कि आज की इस भौतिकता के युग में हम मानव कहलाने वाले प्राणी मानव नहीं है और न ही हमारी संतति मनुष्य हैं। आज के मानव में मानवता समाप्त होती जा रही है। मनुष्य बनना भी आसान काम नहीं है। मनुष्य बनने के लिए बहुत बड़ी साधना करनी पड़ती है। इसके लिए पहले स्वयं को सावधान होना होगा। यहां किसी कवि की पंक्ति स्मरण हो रही है।

अरे सुधारक! जगत का, मत कर चिंता यार।
यह देह तेरा जगत है, पहले इसे सुधार।।

निश्चित रूप से दुनिया के लोगों का सुधार करने के लिए पहले स्वयं को सुधारना होगा। 'मनुर्भव' तथा जनया दैव्यं जनम् का मतलब भी तो यही है। पहले तू स्वयं मनुष्य बन, फिर दिव्य गुण युक्त संतति को जन्म दे। ऐसी संतति को जन्म दे जो समय की गति में आगे बढ़ते हुए परिवार समाज एवं राष्ट्र में अपने यशोगान रूपी ध्वज को ऊंचा कर सके। दिव्यगुण युक्त संतति समय आने पर न केवल माता–पिता व अभिभावक के लिए ही सहयोगी होती है। बल्कि ऐसी संतति का राष्ट्र के हित में अपना योगदान देती है। यथा श्री दशरथ पुत्र राम। राजा दशरथ पुत्र राम के बारे में तो यह प्रसिद्ध ही है कि उनके दिव्य गुणों के कारण ही मर्यादा पुरुषोत्तम की पदवी से अलंकृत किया गया लोकहित की आराधना में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के एक व्यक्तित्व की कवि भवभूति ने अपने नाटक उत्तर रामचरित में बहुत ही धार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है –

स्नेहं, दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीयमिः।
लोकहित आराधनाय मुन्चतु न मे जाया।।

अर्थात श्री राम जी का यह कथन है कि न मुझे दया, न स्नेह और न ही मुझे किसी मित्र की आवश्यकता है। यहां तक कि लोकहित में मुझे अपनी पत्नी 'सीता' का भी परित्याग करना पड़े तो मुझे किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं होगा।

श्री राम के संपूर्ण जीवन को देखिए। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यद्यपि उनका जीवन संघर्षों से भरा रहा, पर बड़ा ही मर्यादित रहा। श्रीराम ने अपने जीवन को जहां धन्य किया है, वहीं उन्होंने अपनी संतति के निर्माण के लिए बहुत बड़ा त्याग किया है। 'साकेत' पुस्तक में इस संदर्भ में बहुत सुंदर चित्रण है। जब सीता गर्भवती होती है तब राम और सीता दोनों आपस में विचार–विमर्श करते हैं कि हमारी संतति ऐसी बने, जिसका संपूर्ण जीवन राष्ट्र के भले के लिए हो। अतः सीता को गर्भवती होने के बाद उसकी रजामंदी एवं सत्य संकल्प को समझकर राम ने सीता को महर्षि विश्वामित्र के आश्रम में भेजा था, न कि किसी धोबी के कहने से। राम और सीता दोनों ही चाहते थे कि हम दोनों से जो संतति जन्म ले, वह राष्ट्र के भले के लिए हो। जब सुख–सुविधाओं के बीच जन्म लेती है तब स्वाभाविक रूप से कष्ट आने पर मुसीबतों को नहीं झेल पाती है।

अस्तु! संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं उन सबने अपने जीवन को कष्टों के बीच में ही खड़ा किया है। सभी महापुरुषों का जीवन संघर्षों से भरा जीवन रहा है। चाहे वे राम हो। चाहे कृष्ण, चाहे स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद अथवा महात्मा बुद्ध क्यों न हो? सबके जीवन में एक विशेष प्रकार का संघर्ष बना रहा है। तभी वे सब मनुष्य बने और महामानव कहलाये। किसी कवि ने बड़ा सुंदर कहा है –

समर में जो घाव खाता है, वही बलवान होता है।
मधुर उस वेदना में, अमर वरदान होता है।।
खाता है, घाव जो छेनी का हथौड़ी का।
समाज–मंदिर में कहीं भगवान होता है।।

एक अच्छा इंसान बनने के लिए तो कष्टों को भी झेलना होगा। बड़े से बड़ा तप भी करना होगा और यों कहना चाहिए कि अपनी दुष्प्रवृतियों को दूर करने के लिए संस्कारों की भट्टी में स्वयं को तपाना भी होगा। यहां मुझे एक दार्शनिक व्यक्ति जिसका नाम महात्मा सुकरात था, संस्मरण हो उठा। महात्मा सुकरात से एक नव–दंपत्ति ने प्रश्न पूछा – महाराज एक सु–संतति को जन्म देने के लिए उसकी तैयारी कब से होनी चाहिए। तब महात्मा सुकरात का उत्तर था – उसके जन्म के 100 वर्ष पूर्व से।

अब जरा विचार कीजिए कि 'मनुर्भव' शब्द तथा 'जनया दैव्यं जनम्' अर्थात मनुष्य बन और दिव्यगुणयुक्त संतति को जन्म दें, यह अपने आप में कितना महत्वपूर्ण है। जैसा कि शुरू

में ही बता दिया गया है कि मानव जीवन का लक्ष्य मंत्रानुरूप 'मनुर्भव' तथा जनया दैव्यं जनम् है और यही सत्य है। तब प्रश्न उठता है कि फिर इसके साधन क्या हैं? इसके लिए भी वेद मौन नहीं है, बल्कि ऊपर प्रस्तुत मंत्र में ही साधन भी बताए गए हैं, जो इस प्रकार है–

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि – अर्थात जीवन के ताने–बाने को तनता और बुनता हुआ प्रकाशमान सूर्य का अनुसरण कर।

'मनुर्भव' तथा जनया दैव्यं जनम् का सबसे प्रथम साधन बताया गया है प्रकाशमान सूर्य का अनुसरण करना। प्रकाशमान सूर्य की कई विशेषताएं हैं। यथा सूर्य समय पर उदय और समय पर ही अस्त होता है। सूर्य निरंतर गतिमान है। सूर्य के प्रकाश से धरती के सब प्राणी को उजाला मिलता है। ठीक उसी प्रकार सभी मनुष्य के लिए यही शिक्षा है कि मनुष्य अपने जीवन को सूर्य की भांति नियमों अर्थात् जगत के व्यावहारिक मर्यादाओं में नियंत्रित करें तथा जीवन को निरंतर सत्कर्मों में लगा दें तथा दुनिया के लोगों के लिए सूर्य की तरह प्रकाश स्तंभ बनें। इस भौतिक जगत में सूर्य का प्रतिनिधित्व 'अग्नि' करती है। हम देखते हैं कि अग्नि की लपटें हमेशा ऊपर की ओर उठती हैं। अतः मनुष्य जब वास्तविक रूप से मनुष्य बनने लगता है अर्थात् मानवता के गुण स्वयं में विकसित करने लगता है तब उसकी उन्नति प्रगति होती है। अथर्ववेद की भी यही सूक्ति है – उद्यानम् ते पुरुष नावमानम् अर्थात् हे मनुष्य! तू हमेशा उन्नति ही उन्नति कर, अवनति को न प्राप्त कर। अब मनुष्य बनने के लिए दूसरा साधन मंत्र में बताया गया है –

ज्योतिष्मर्तः पयो रक्त धिया कृतान् – अर्थात प्रकाशमान मार्ग की बुद्धि के द्वारा रक्षा कर। संसार के बुद्धिजीवियों ने जो हमें मार्ग बतलाया, हमें भी उसी मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए। संस्कृत साहित्य के कवि ने बड़ा ही सुंदर कहा है – 'महाजनों येन गतो सः पंथाः' अर्थात महान लोग जो जिस रास्ते पर चले हैं, वह मार्ग सही व सरल मार्ग है। दुनिया के मनीषियों ने, संत महात्माओं ने जो मार्ग हमें प्रशस्त किया वह मार्ग निश्चित रूप से हमारे लिए अनुकरणीय है। यहां मुझे महाराज रणजीत सिंह जी से जुड़ी एक कहानी याद आ रही है। किस तरह का मार्ग उन्होंने हमारे लिए प्रशस्त किया? एक बार महाराणा रणजीत सिंह जी घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहे थे। उनके साथ उनके कई अंगरक्षक भी थे। मार्ग में अचानक महाराजा रणजीत सिंह के सिर पर एक पत्थर गिरा। महाराजा रणजीत सिंह जी के सिर से रक्त बहना शुरू हो गया। जब अंग रक्षकों ने इधर–उधर मुड़कर देखा तो पाया कि बगल में ही थोड़ी दूर पर कुछ छोटे–छोटे बच्चे खेल रहे हैं। उन्हीं में से किसी एक बालक ने पत्थर मारा था और वह अंग रक्षकों द्वारा पकड़ा गया। जब उस बालक को महाराजा रणजीत सिंह जी के सामने उपस्थित किया गया तो उन्होंने उस बालक से पत्थर मारने का कारण पूछा। बालक ने डरते हुए कहा – महोदय पत्थर तो मैंने एक वृक्ष पर मारा था ताकि मुझे वृक्ष फल दे सके। परंतु ऐसा नहीं हुआ और वह पत्थर आप को जा लगा। बालक के इस दर्द को महाराजा रणजीत सिंह तुरन्त समझ जाते हैं और अपने ही एक अंगरक्षक को वहां उपस्थित सभी बालकों के लिए फल लाकर देने को कहते हैं। अब अंगरक्षक आश्चर्य में पड़ जाता है और महाराजा रणजीत सिंह से पूछता है – महाराज! इस बालक को तो दंड मिलना चाहिए, फिर भला इन्हें फल क्यों? तब महाराजा रणजीत सिंह जी ने जो उत्तर दिया वह सचमुच में मनुष्य बनने का एक जीता जागता नमूना है। उन्होंने कहा इस अबोध बालक ने जिस पेड़ पर पत्थर मारा, फल खाने के लिए वह पेड़ बोल नहीं सकता और ना ही कुछ समझ सकता है, क्योंकि उसके पास बुद्धि नहीं है। परंतु वह फल अवश्य दे देता है। परंतु देखो हम मनुष्य के पास तो बुद्धि है, हमें यह भी पता है कि उसने यह पत्थर जानबूझकर नहीं मारा है, फिर भला हमें उसे दंड क्यों देना चाहिए। यह मानवता के विरुद्ध है। अब तीसरे साधन पर विचार करते हैं –

अनुतबण वयत जोगुवामपो – अर्थात उपासकों के उलझनरहित कार्यों को आगे बढ़ा।

संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन सब की सोच में भिन्नता रही है। सभी महापुरुष भिन्न–भिन्न तरीके से संसार में स्वयं जिए हैं तथा दुनिया के लोगों को जीने के लिए प्रेरणा दी है। यों तो यह भी कहा जाता है कि महापुरुषों का जन्म प्रेरणादायक होता है और उनकी मृत्यु भी प्रेरणा से भरी होती है। महर्षि दयानन्द की मृत्यु दीपावली के दिन सायं 5:45 बजे हुई थी। यह वह समय था जब भारतीय संस्कृति में हिंदू परिवार के लोग अपने घर में उस दिन घी के दिए जलाते हैं और सर्वत्र उजाला कर देते हैं। अतः महर्षि दयानन्द की इस मृत्यु से हमें यह शिक्षा मिलती है कि अपने जीवन को इस तरह जियो कि यह जीवन उजालों से भर जाए। यहां एक कवि की कुछ पंक्तियां याद आ रही है –

जो व्यथाएँ प्रेरणा दे, उन व्यथाओं को दूर करो। जूझकर कठिनाइयों से, रंग जीवन का निखारो। वृक्ष कट–कट कर बढ़ा है, दीप बुझ–बुझ कर जला है मृत्यु से प्रेरणा मिले तो आरती उतारो।

वस्तुतः महापुरुषों के जीवन की लीलाएं तो प्रेरणा देने वाली ही होती हैं। कई बार लोग भ्रम में पड़ जाते हैं और सोचने लगते हैं कि दुनिया में महापुरुषों की भरमार है। फिर किस महापुरुष की बात मानी जाए। 'वेद' का मंतव्य यहाँ बड़ा स्पष्ट है कि इस लौकिक जगत् में महापुरुषों के उलझन रहित कार्यों को आगे बढ़ा। अर्थात जो महापुरुष जिस किसी विशेष कार्य से अधिक प्रभावित रहे हैं, उसके कार्य उलझन रहित हैं उदाहरण के लिए महात्मा गांधी का जीवन अहिंसा एवं सत्य पर आधारित था। वे अहिंसा के पुजारी माने जाते थे। महात्मा बुद्ध भी सब प्राणियों पर करुणा का भाव अधिक रखते थे। राजा हरिश्चंद्र का जीवन सत्यमय था। श्री कृष्ण एक नीति निपुण व्यक्ति थे। श्री राम का संपूर्ण जीवन एक मर्यादा से भरा रहा।

ऋषि दयानंद का जीवन धर्मशील रहा। इस तरह जितने भी महापुरुषों के जीवन को देखते हैं, वे अपने–अपने विशेष गुणों के आधार पर ही अपने कार्यों को उलझन रहित बना कर हम सब मनुष्यों के लिए पथ प्रदर्शक बने रहे।

उपर्युक्त सभी साधनों को यदि हम अपने जीवन–पद्धति से जोड़ेंगे तो निश्चित रूप से हम सब भी सच्चे मनुष्य बन जाएंगे और हमारी संतति भी सुसंतति बन जायेगी।

यज्ञ को न जानने वाले बन्धुओं के लिए यज्ञ विषयक जानकारी

''यज्ञ क्या होता है और कैसे किया जाता है?''

–मनमोहन कुमार आर्य

यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कार्य वा कर्म को कहते हैं। आजकल यज्ञ शब्द अग्निहोत्र, हवन वा देवयज्ञ के लिए रूढ़ हो गया है। अतः पहले अग्निहोत्र वा देवयज्ञ पर विचार करते हैं। अग्निहोत्र में प्रयुक्त अग्नि शब्द सर्वज्ञात है। होत्र वह प्रकिया है जिसमें अग्नि में आहुत किये जाने वाले चार प्रकार के द्रव्यों की आहुतियां दी जाती हैं। यह चार प्रकार के द्रव्य हैं– गोधृत व केसर, कस्तूरी आदि सुगन्धित पदार्थ, मिष्ट पदार्थ शक्कर आदि, शुष्क अन्न, फल व मेवे आदि तथा ओषधियां वा वनस्पतियां जो स्वास्थ्यवर्धक होती हैं। अग्निहोत्र का मुख्य प्रयोजन इन सभी पदार्थों को अग्नि की सहायता से सूक्ष्मातिसूक्ष्म बनाकर उसे वायुमण्डल व सुदूर आकाश में फैलाया जाता है। हम सभी जानते हैं कि जब कोई वस्तु जलती है तो वह सूक्ष्म परमाणुओं में परिवर्तित हो जाती है। परमाणु हल्के होते हैं अतः वह वायु मण्डल में सर्वत्र वा दूर–दूर तक फैल जाते हैं। वायु मण्डल में फैलने से उनका वायु पर लाभप्रद प्रभाव होता है। जिस प्रकार दुर्गन्धयुक्त वायु स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद व मन के लिए अप्रिय होती है उसी प्रकार से गोघृत व केसर, कस्तूरी आदि नाना प्रकार के सुगन्धित द्रव्यों के जलने से वायु का दुर्गन्ध दूर होकर वह सुगन्धित, स्वास्थ्यप्रद व रोगनाशक हो जाती है। इस यज्ञ के परिणाम स्वरूप यज्ञ से पूर्व की वायु के गुणों में वृद्धि होकर वह स्वास्थ्यवर्धक, रोगनिवारक, वर्षाजल को शुद्ध करने वाली, प्रदूषण निवारक, वर्षा जल पर आश्रित अन्न व वनस्पतियों को स्वास्थ्यप्रद करने, यहां तक की अच्छी सन्तानों को जन्म देने में भी सहायक होती है।

अग्निहोत्र यज्ञ करने के लिए हम घर में एक यज्ञकुण्ड वा हवनकुण्ड का प्रयोग करते है जो तली में छोटा व ऊपर की ओर बड़ा व खुले मुख वाला होता है। यह पूरा यज्ञ कुण्ड टीन, लोहे व ताम्बे का बना होता है। भूमि खोद कर भी यज्ञ कुण्ड बनाया जा सकता है। आम, पीपल, गुग्गल, कपूर व पलाश आदि अनेक प्रकार के स्वास्थ्य व पर्यावरण के हितकर काष्ठों की समिधाओं को यज्ञ कुण्ड के आकार में काट कर उन्हें यज्ञकुण्ड में रखा जाता है। कपूर को यज्ञ में प्रयुक्त घृताहुति वाली चम्मच में रखकर उसे दीपक के द्वारा प्रदीप्त किया जाता है। इस प्रक्रिया को करते हुए वेद मन्त्र को बोलकर अग्नि का आधान यज्ञकुण्ड के बीच समिधाओं में किया जाता है। जब अग्नि प्रज्ज्वलित हो जाती है तो यज्ञ के विधान के अनुसार परिवार का एक व अधिक सदस्य घृत की और कुछ हवन सामग्री वा साकल्य जिसका वर्णन ऊपर किया गया है, को लगभग पांच–पांच ग्राम या कुछ अधिक मात्रा में लेकर उसकी आहुतियां वेद मन्त्रों को बोलकर यज्ञ की अग्नि में डाली जाती हैं जिससे अग्नि में पड़ कर वह आहुतियां पूर्णतया जलकर व सूक्ष्म होकर वायुमण्डल में फैल जायें। जिन मन्त्रों को शुद्ध उच्चारित कर आहुतियां दी जाती हैं, उनके अन्त में स्वाहा बोला जाता है। मन्त्र बोलने का प्रयोजन यह है कि इससे यज्ञ करने के लाभ यजमान वा यज्ञकर्त्ता को विदित हो जाये और साथ ही उन मन्त्रों के कण्ठस्थ हो जाने से उनकी रक्षा व सुरक्षा हो सके। इस प्रकार न्यून से न्यून प्रतिदिन प्रातः व सायं सोलह–सोलह व अधिक आहुतियां देने का विधान हमारे पूर्वजों व ऋषियों ने किया है। इस प्रकार से यज्ञ अग्निहोत्र करने में मात्र 10 से 15 या अधिकतम 20 मिनट का समय लगता है। इस प्रक्रिया से वायुमण्डल शुद्ध हो जाता है। यज्ञ की गर्मी से घर का वायु हल्का होकर ऊपर व खिड़कियों–रोशनदानों से बाहर चला जाता है और बाहर का शुद्ध व हितकर वायु घर के अन्दर प्रवेश करता है। इससे घर में रहने वाले सभी सदस्यों का स्वास्थ्य अच्छा वा निरोग रहता है। परिवार के किसी भी सदस्य को रोग नहीं होते और यदि किसी कारण से हों भी जायें तो अल्प मात्रा में उपचार करने से वह शीघ्र ठीक हो जाते हैं। घृत एवं यज्ञ सामग्री के अनेक पदार्थ किटाणु नाशक भी हैं। यज्ञ करने से जल, वायु आदि में व घर में यत्र–तत्र जो सूक्ष्म हानिकारक कीटाणु छिपे होते हैं, वह भी नष्ट हो जाते हैं। शुद्ध वायु मिलने से मनुष्यों का स्वास्थ्य अच्छा होता है व उनके शरीर बलवान, रोगमुक्त व स्वस्थ होते हैं। यज्ञ करने के अनेक अदृश्य लाभ भी होते हैं जो यज्ञ में वेद मन्त्रों के द्वारा की जाने वाली प्रार्थनाओं के अनुरूप प्राप्त होते हैं। ऋषियों ने अपनी गवेषणा व अनुसंधान से यहां तक कहा कि यज्ञ करने वाले के अगले पुनर्जन्म में यह आहुतियां उसको अनेकविध लाभ पहुंचाती हैं। हमारी गवेषणा के अनुसार यह लाभ ईश्वर जीवात्मा को प्रदान करता है। यह जानना भी जरूरी है कि वेद मन्त्र ईश्वर के द्वारा प्रदत्त व निर्मित है। वेदों की कोई भी बात अज्ञान व असत्य नहीं है। वेद मन्त्रों में असम्भव प्रार्थनायें भी नहीं है जो उसके अनुरूप व्यवहार करने से पूर्ण वा सिद्ध न हों। वेद की प्रार्थनायें सत्य व ज्ञान से परिपूर्ण हैं। अतः वेदों में जो कहा गया है वह जीवन में अवश्य प्राप्त होता है अथवा वह सभी लाभ उसको प्राप्त होते हैं जो व्यक्ति यज्ञ को करता है। यह भी उल्लेखनीय है कि यज्ञ को करते समय जब यज्ञकुण्ड की अग्नि मन्द होने लगे तो उसमें आवश्यकतानुसार समिधायें रखते रहना चाहिये जिससे हमारी आहुतियां तेज वा प्रचण्ड अग्नि से सूक्ष्म होकर वायुमण्डल व आकाश में दूर दूर तक पहुंचती रहे।

अब यज्ञ करने की विधि भी जान लेते हैं। प्रातःकाल यज्ञ से पूर्व तथा सायंकाल यज्ञ के पश्चात **''सन्ध्योपासना''** करने का विधान है। सन्ध्या का अर्थ है कि ईश्वर का भलीभांति ध्यान कर उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना। सन्ध्या की सर्वांगपूर्ण अति उत्तम विधि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने पंच महायज्ञ विधि व

संस्कार विधि पुस्तकों में प्रस्तुत की है। सन्ध्या के बाद तथा जब सूर्योदय हो गया हो, तब अग्निहोत्र किया जाता है। सबसे पहले गायत्री मन्त्र का पाठ कर लेना चाहिये जिससे मन यज्ञ करते समय इधर–उधर न भागे और यज्ञ में ही एकाग्र रहे। इसके बाद तीन आचमन अर्थात् अल्प मात्रा में जल पीने का विधान है जो आचमन के मन्त्रों को बोलकर किये जाते हैं। इससे कफ आदि की निवृत्ति होकर वाणी का उच्चारण शुद्ध होता है। इसके पश्चात बायें हाथ की अंजलि में जल लेकर दायें हाथ की अंगुलियों से शरीरस्थ इन्द्रियों के स्पर्श करने का विधान है। इस प्रक्रिया द्वारा ईश्वर से इन्द्रियों व शरीर के स्वस्थ, निरोग व बलवान होने की प्रार्थना है। तत्पश्चात 8 स्तुति–प्रार्थना व उपासना के मन्त्रों का उनके अर्थ को विचार करते हुए या पृथक से बोल कर गायन वा उच्चारण करने का विधान है। इसके बाद दीपक जला कर उससे कपूर को प्रज्ज्वलित कर यज्ञ कुण्ड में उस कपूर की अग्नि का आधान मन्त्रों को बोलकर किया जाता है जो मात्र 25 से 30 सेकेण्ड्स में हो जाता है। अग्न्याधान के बाद चार मन्त्रों को बोलकर काष्ठ की 3 समिधायें प्रदीप्त अग्नि पर रखने का विधान है। समिदाधान के बाद एक ही मन्त्र को पांच बार बोल कर घृत की आहुतियां दी जाती हैं। तत्पश्चात चारों दिशाओं में जल सिंचन का विधान है। यह सभी कार्य पृथक–पृथक मन्त्रों को बोल कर किये जातें हैं। जल सिंचन के बाद घृत की दो आघाराज्य व दो आज्यभाग आहुतियां दी जाती हैं। इसके बाद दैनिक यज्ञ की आहुतियां दी जाती हैं। प्रातः काल की 12 आहुतियां एवं सायं काल की भी 12 आहुतियां हैं। इनके बाद यज्ञकर्त्ता यजमान यदि अधिक आहुति देना चाहें तो गायत्री मन्त्र को बोलकर देने का विधान है। इसके बाद पूर्णाहुति तीन बार **'ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।'** बोलकर की जाती है। इससे पूर्व यदि यजमान **स्विष्टकृदाहुति** व **प्राजापत्याहुति** देना चाहे तो सम्बन्धित मन्त्रों को बोल कर दे सकता है। इस प्रकार से दैनिक यज्ञ सम्पन्न होता है। बहुत से लोग प्रातः व सायं यज्ञ न कर सायंकाल के 4 मन्त्रों को भी प्रातःकाल के यज्ञ में सम्मिलित कर आहुतियां दे देते हैं। इस प्रकार से यज्ञ पूर्ण हो जाता है। यज्ञ के बाद हिन्दी में **'यज्ञरूप प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए, छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिए'** यह यज्ञ प्रार्थना भी की जा सकती है और उसके बाद शान्तिपाठ का मन्त्र बोलकर यज्ञ समाप्त हो जाता है। यह अग्निहोत्र वा देवयज्ञ करने की विधि व विधान है। यह भी ध्यान रखना अत्यावश्यक है यज्ञ पूर्णतः अंहिसात्मक कर्म है, इसमें किंचित किसी प्राणी की हिंसा निषिद्ध है। ऐसा होने से यज्ञ, यज्ञ न होकर पापकर्म बन जाता है।

सभी मनुष्य श्वास में मुख्यतः आक्सीजन लेते और कार्बन डाइआक्साइड गैस छोड़ते हैं। इससे वायु प्रदुषित होती है। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने प्रयोजन से की गई दूषित वायु को शुद्ध करे। इसी प्रकार हम अपने निजी प्रयोजन से वायु सहित प्रकृति को भी प्रदूषित करते हैं। हमारा कर्तव्य है कि रोग व दुःखों से बचने व अन्यों को बचाने के लिए हम वायु, जल व प्रकृति को शुद्ध रखें व यज्ञ आदि क्रिया कर सबको शुद्ध करें। जो मनुष्य, स्त्री व पुरूष, ऐसा नहीं करता वह पाप का भागी होता है। यज्ञ न करना पाप करना है क्योंकि इससे हमारे द्वारा किये गये भिन्न–भिन्न प्रकार के प्रदूषणों से अन्य प्राणियों को दुःख होता है। यदि मनुष्य इस जन्म व परजन्मों में सुखी होना चाहता है तो उसे यज्ञ अवश्य करना चाहिये। यज्ञ का अन्य कोई विकल्प नहीं है। यदि नहीं करेगा तो कालान्तर में परिणाम ईश्वर की व्यवस्था से इसके सम्मुख अवश्य आता है। इसके साथ ही यह धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष से भी अनेक प्रकार से भी वंचित हो जाता है।

धर्म की एक शब्द की एक परिभाषा है ''सत्याचरण''। सत्याचरण में माता–पिता की सेवा सुश्रुषा सहित प्राणिमात्र पर दया व उनके भोजन का प्रबन्ध करने के साथ, विद्वान अतिथियों की सेवा, उनसे सद्व्यवहार, उनका अन्न, धन, वस्त्र दान द्वारा सम्मान एवं यथासमय ईश्वरोपासना–सन्ध्या व अग्निहोत्र कल्याण के हितैषी सब मनुष्यों को अनिवार्य रूप से करना चाहिये। जो करेगा वह ईश्वर से इन कर्मों का लाभ व फल पायेगा और जो नहीं करेगा वह ईश्वरीय दण्ड का भागी होगा। यह हमने बहुत संक्षेप में अग्निहोत्र देव यज्ञ पर प्रकाश डाला है। यज्ञ पर बहुत साहित्य उपलब्ध है। यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कर्म को कहते हैं। इसका अर्थ है देवों की पूजा, उनसे संगतिकरण और सबको पात्रतानुसार दान देना। इसके अनुसार माता–पिता–आचार्यों व विद्वानों का सम्मान व सेवा–सत्कार भी यज्ञ है। इनके साथ संगतिकरण कर उनके ज्ञान व अनुभव को प्राप्त करना और उससे जनकल्याण व प्राणियों का हित करना भी यज्ञ है। इसी प्रकार से अपनी सामर्थ्यानुसार सुपात्रों को अधिक से अधिक दान देकर देश व समाज को समरस, एकरस व गुण–कर्म–स्वभाव के अनुसार यथाशक्ति सुख–सुविधायें प्रदान करना भी यज्ञ के अन्तर्गत आता है। लेख को समाप्त करने पर यह अवगत कराना है कि इस लेख में स्थानाभाव के कारण हम यज्ञ के मन्त्रों को प्रस्तुत नहीं कर सके हैं। इसके लिए पाठक नैट पर उपलब्ध पुस्तक को डाउनलोड कर सकते हैं या आर्यसमाज के पुस्तक विक्रेताओं से क्रय कर सकते हैं। सहायतार्थ यूट्यूब पर उपलब्ध वीडियोज् को भी देखा जा सकता है। इसी के साथ हम इस संक्षिप्त लेख को विराम देते हैं।

पताः 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001
फोन : 09412985121

आर्य जगत् में यज्ञ के प्रति अगाध श्रद्धा के लिए विख्यात

श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री की धर्मपत्नी आर्य माता सरोज अग्निहोत्री जी का देहावसान

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, श्री अनिल आर्य, डॉ. वागीश, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्री धर्मपाल आर्य, श्री आनन्द चौहान, श्री महेश वेदालंकार, श्री योगेश मुंजाल, श्री योगराज अरोड़ा, श्री महेन्द्र भाई आदि ने

अर्पित की विनम्र श्रद्धांजलि

माता सरोज अग्निहोत्री जी ने जीवन के अन्तिम श्वांस तक यज्ञ की अग्नि को रखा प्रज्ज्वलित – स्वामी आर्यवेश

सम्पूर्ण आर्य जगत् में यज्ञ के प्रति अगाध श्रद्धा, निष्ठा एवं पवित्र भावना के लिए विख्यात श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी की धर्मपत्नी आर्य माता सरोज देवी अग्निहोत्री का गत दिनों देहावसान हो गया। वे 77 वर्ष की आयु पूर्ण करके अपनी नश्वर देह को छोड़कर विदा हुईं। उनके निधन से आर्य जगत् ने एक धर्म पारायणा, यज्ञ को समर्पित आर्य माता को खो दिया। उनका जीवन सदैव लोगों को यज्ञ की प्रेरणा देता रहेगा। विदित हो कि देहावसान से दो दिन पूर्व माता सरोज देवी भक्ति आश्रम आर्य नगर, रोहतक में आयोजित विशेष यज्ञ में आहुति प्रदान करके आई थीं कि अचानक स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण वे चल बसीं। महात्मा प्रभु आश्रित महाराज के द्वारा दी गई प्रेरणा के अनुसार श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री के पूज्य माता–पिता ने पाकिस्तान से लाकर जो यज्ञाग्नि भारत में अपने निवास जवाहरनगर दिल्ली में जलाई थी वह यज्ञाग्नि आज तक निरन्तर प्रज्ज्वलित है। इसका श्रेय जहाँ श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी को जाता है वहाँ यह भी निर्विवाद सत्य है कि माता सरोज अग्निहोत्री जी की अगाध श्रद्धा भी इस यज्ञाग्नि को प्रज्ज्वलित रखने में मुख्य भूमिका में रही। उन्होंने न केवल स्वयं इस संकल्प को बनाये रखा अपितु अपने पति श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री को भी सदैव प्रेरणा देकर यज्ञ करने एवं यज्ञ के लिए विशेष दान करने के लिए उत्साहित करती थी।

श्रद्धांजलि सभा में माता सरोज अग्निहोत्री जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी

माता सरोज अग्निहोत्री की अन्त्येष्टि निगम बोध घाट पर वैदिक रीति से की गई जिसमें गुरुकुल गौतमनगर व अन्य संस्थाओं के ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य लोग उन्हें अन्तिम विदाई देने के लिए उपस्थित थे। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। अन्त्येष्टि से पूर्व अग्निहोत्री निवास पर सामवेद पारायण यज्ञ स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व में किया गया।

निगम बोध घाट पर पारिवारिकजनों को सान्त्वना तथा मौन धारण करवाते हुए स्वामी आर्यवेश जी

27 नवम्बर, 2018 को आर्य समाज हनुमान रोड में माता सरोज अग्निहोत्री की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें मंच संचालन श्रीमती सुनिता जी ने श्री अनिल आर्य के सहयोग से संभाला। इस अवसर पर सर्वश्री स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, स्वामी धर्ममुनि जी, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, डॉ. वागीश शर्मा, डॉ. महेश विद्यालंकार, श्री विनय आर्य, श्री धर्मपाल आर्य, श्री आनन्द चौहान, श्री योगेश मुंजाल, श्री योगराज अरोड़ा, श्रीमती गायत्री मीणा, श्रीमती प्रवीण आर्या, डॉ. ओम प्रकाश योगी, श्री महेन्द्र भाई सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने माता सरोज अग्निहोत्री जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभी के आगमन पर कृतज्ञता व्यक्त की।

वैदिक आश्रम सोमधाम, खेड़ला, जिला–गुड़गांव में

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की गरिमामयी उपस्थिति एवं

स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ तथा वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वैदिक आश्रम सोमधाम, खेड़ला, जिला–गुड़गांव का वार्षिक यज्ञ एवं उत्सव 25 नवम्बर, 2018 को सम्पन्न हो गया। कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त शराबबन्दी संघर्ष समिति के प्रधान स्वामी रामवेश जी, स्वामी ओमवेश जी बिजनौर, डॉ. ओम प्रकाश योगी, साध्वी शिवानन्दा, परोपकारिणी सभा के मंत्री श्री कन्हैया लाल आर्य आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

यज्ञ के ब्रह्मा पद को स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज ने सुशोभित किया। कन्या गुरुकुल जसात, रेवाड़ी की छात्राओं ने सुन्दर वेद पाठ किया। आश्रम के संस्थापक एवं संचालक स्वामी विजयवेश जी एवं साध्वी मुक्तानन्दा जी ने विशेष पुरुषार्थ करके कार्यक्रम को अत्यन्त प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाया हुआ था। आगन्तुक महानुभावों को यज्ञ एवं अध्यात्म की विशेष प्रेरणा प्राप्त हो रही थी। कार्यक्रम के दौरान

स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज ने साधकों को योगाभ्यास भी कराया और अपने उपदेशामृत से कृतार्थ किया। आश्रम के विशेष सहयोगियों के रूप में श्रीमती रेखा चौधरी कोषाध्यक्षा, श्री जतन वीर सिंह एडवोकेट, श्री सुभाष दुआ, श्री रामेन्द्र आर्य आदि ने भी अपना समय देकर कार्यक्रम में योगदान दिया।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर अपने सारगर्भित एवं प्रेरणादायक प्रवचन से श्रोताओं को अत्यन्त प्रभावित किया और सभी को संकल्प दिलवाया कि वे अपने जीवन में यज्ञ से प्रेरणा लेकर परोपकार, सेवा एवं समर्पण की भावना को आत्मसात करें। सभा प्रधान जी के साथ ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र एवं श्री धर्मेन्द्र आर्य भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

सामाजिक व आर्थिक विकास में शिक्षा की अहम भूमिका

– कृष्ण कुमार यादव

भारतीय संस्कृति का एक सूत्र वाक्य है 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'। अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने की इस प्रक्रिया में शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान है। भारतीय परंपरा में शिक्षा को शरीर मन और आत्मा के विकास द्वारा मुक्ति का साधन माना गया है। शिक्षा मानव को उस सोपान पर ले जाती है जहां वह अपने समग्र व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। इस समग्र व्यक्तित्व विकास में सिर्फ भौतिक परिलब्धियाँ ही नहीं बल्कि शारीरिक व मानसिक विकास के साथ–साथ बौद्धिक परिमार्जन, सांस्कृतिक चेतना एवं आर्थिक व सामाजिक मूल्यों का उन्नयन भी महत्वपूर्ण है। स्वामी विवेकानंद के शब्द यहां याद आते हैं – ''वास्तव में सभी प्रकार की शिक्षा और अभ्यास का उद्देश्य 'मनुष्य निर्माण' ही होना चाहिए। सारे प्रशिक्षणों का अंतिम ध्येय मनुष्य का विकास करना ही है। जिस अभ्यास से मनुष्य की इच्छा शक्ति का प्रभाव और प्रकाश संयमित होकर फलदाई बन सके, उसी का नाम है शिक्षा।''

स्पष्ट है शिक्षा आजीवन चलने वाली मनुष्य के परिष्कार का साधन है। वेदांतों में तो यहां तक लिखा गया है कि समस्त ज्ञान हमारे अंदर ही विद्यमान है एक शिशु में भी है, केवल उसे जागृत करना है। शिशु में 'ज्ञान' का जागृत होना ही शिक्षा का कहलाती है।'' 'शिक्षा' शब्द संस्कृत भाषा के 'शिक्षाविद्योपादाने' से निष्पन्न है, जिसका अर्थ है– 'विद्या का उपादान।' 'उप' माने 'समीप' एवं 'आदान' माने 'ग्रहण' अर्थात् किसी के समीप जाकर विद्या ग्रहण करना। इसी परिभाषा के अनुसार प्राचीन काल में गुरुकुल परंपरा थी, जहां राजा और रंक दोनों एक साथ गुरु के सानिध्य में शिक्षा ग्रहण करते थे। इससे जहां घर एवं परिवार के प्रति आसक्ति दूर होती थी, वहीं समभाव भी पैदा होता था। यह शिक्षा मात्र किताबी नहीं थी बल्कि इसमें आचरण, नैतिक मूल्य, संस्कार, बौद्धिक परिमार्जन, भावनात्मक विकास, शारीरिक स्वास्थ्य एवं प्रकृति व अन्य प्राणियों का साहचर्य शामिल था। हमारी प्राचीन गुरुकुल की शिक्षा व्यवस्था अनमोल और शाश्वत है। यह हमें आज भी सही दिशा में बढ़ने की प्रेरणा देती है और हमारा मार्गदर्शन करती है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को चहरदीवारियों में कैद नहीं रखती, बल्कि उनमें अंतर्निहित संभावनाओं को अनंत विस्तार देती है। पाश्चात्य दार्शनिक कांड के शब्द गौरतलब हैं – ''शिक्षा व्यक्ति की पूर्णता का विकास है, जिस पर वह पहुंच सकता है।''

शिक्षा का यह परंपरागत रूप लंबे समय तक चला पर अंग्रेजी शासन व्यवस्था ने इसमें अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु आमूल–चूल परिवर्तन किए। शिक्षा की मैकाले नीति ने पूरा ढर्रा ही बदल दिया। वर्तमान दौर में देखें तो वाकई चीजें काफी हद तक परिवर्तित हो चुकी हैं। यथार्थ के धरातल पर आज शिक्षा की कसौटी ही बदल गई है। सतत चलने वाली प्रक्रिया की बजाय शिक्षा को स्कूल कॉलेजों की चहरदीवारियों में कैद कर दिया गया है। शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य अच्छा कैरियर बनाना हो गया है। पढ़ाई में कोई कितना भी निपुण हो, परंतु बिना अच्छे कैरियर के उसका कोई मोल नहीं रह गया कभी साहचर्य और समन्वय शिक्षा के अभिन्न अंग थे, पर अब तो इस ने विद्यार्थियों को आपस में ही प्रतिस्पर्धी बना दिया है। किताबी कीड़ा बनाती शिक्षा की कसौटी पास या फेल होने तक रह गई है। कभी कोई फेल होने की आशंका में आत्महत्या कर रहा है तो कोई कम अंक पाने पर। आई.आई.टी. जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में हर साल बढ़ती प्रतिस्पर्धा एवं तनाव न झेल पाने के कारण न जाने कितने विद्यार्थी मौत को गले लगा लेते हैं। आत्मोन्नति पर भौतिक उपलब्धियां और पदोन्नति हावी है। बहुत पहले ही इस ओर इंगित करते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि – हम देखते हैं कि सर्वोच्च बौद्धिक शिक्षा प्राप्त किए हुए लोगों में कई अधार्मिक पुरुष हुए हैं। पाश्चात्य सभ्यता की बुराइयों में से यह भी एक है कि यहां हृदय की परवाह न करते हुए केवल बौद्धिक शिक्षा दी जाती है। ऐसी शिक्षा मनुष्य को दस गुना अधिक स्वार्थी बना देती है।' ऐसे में इस शिक्षा की व्यावहारिकता पर प्रश्नचिन्ह लगना स्वाभाविक है।

महात्मा गांधी ने कहा था कि – जिस शिक्षा का असर हमारे चरित्र पर नहीं होता, वह कुछ काम की नहीं होती पर शिक्षा का सीधा संबंध आज रोजगार से जुड़ गया है। ऐसे में प्रतिस्पर्धा बढ़ना लाजमी भी है। इस प्रतिस्पर्धा की आड़ में शिक्षा में कुकुरमुत्तों की तरह फैलते कालेजों एवं कोचिंग संस्थानों ने अच्छा खासा आर्थिक साम्राज्य खड़ा कर लिया है। यहां शिक्षा की बकायदा कीमत वसूल की जाती है, ऐसे में अभिभावकों एवं विद्यार्थियों पर दबाव पड़ना स्वाभाविक है। उच्च शिक्षा पर जी.डी.पी. का एक प्रतिशत भी नहीं खर्च किया जा रहा है, जिसे अच्छा खासा बढ़ाने की जरूरत है। भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाला देश है। आज हम व्यापक भूमंडलीकरण तथा गहन प्रतिस्पर्धा के कठिन दौर से गुजर रहे हैं। विज्ञान व प्रौद्योगिकी का तेज गति से विस्तार हो रहा है। यह क्षेत्र लगातार अंतर आयामी, बहुआयामी और बहुउद्देशीय होता जा रहा है। भारत के पास उन बड़ी शक्तियों में शामिल होने की पूरी क्षमता है, जिनकी 21वीं सदी में प्रमुख भूमिका होगी। ऐसे में सारी दुनिया भारत की युवा शक्ति पर टकटकी लगाए हुए हैं। युवाओं को सही ढंग से तराशा और संवारा जाए तो वे राष्ट्रीय गौरव का एक नया इतिहास रच सकते हैं। युवा वर्ग अपनी मेधा, परिश्रम और लगन से सबको चकित कर सकते हैं और युवा शक्ति भारत को विश्व का मुकुटमणि बना सकते है। इसीलिए यह आवश्यक है कि युवाओं के व्यक्तित्व का निर्माण हमारी प्राथमिकता में शामिल हो। ऐसे में शिक्षण संस्थाएं, युवाओं के मस्तिष्क के लिए नए क्षितजों के द्वार खोलने और आज के जीवन संदर्भों की चुनौतियों का सफलतापूर्वक मुकाबला करने के लिए तैयार करती हैं।

भारतीय संदर्भ में बात करें तो यहां ब्रेन–ड्रेन अर्थात प्रतिभा पलायन एक महत्वपूर्ण समस्या है। एक सर्वेक्षण के मुताबिक भारत से अमेरिका जाने वाली प्रतिभाओं के कारण भारत को 700 मिलियन डॉलर की राजस्व हानि होती है, जो कि भारत की कुल आय का 12 फीसदी बनता है। स्पष्ट है कि सारी क्रीम विदेशों की तरफ जा रही है। प्रत्येक 10 में से 4 सॉफ्टवेयर विशेषज्ञ अमेरिका में कार्य कर रहे हैं। यही नहीं आज अमेरिका में 38 फीसदी डॉक्टर और 12 फीसदी वैज्ञानिक भारतीय हैं। अमेरिकी स्पेस एजेंसी 'नासा' में 36 फीसदी वैज्ञानिक और इंजीनियर भारतीय हैं तो माइक्रोसॉफ्ट कंपनी के 34 फीसदी तकनीकी विशेषज्ञ और 'इंटेल' कंपनी में 20 फीसदी इंजीनियर भारतीय हैं। वहीं दूसरी तरफ भारत में टेक्नॉलाजी व वित्तीय सेवाओं से जुड़ी कंपनियों की शिकायत है कि उनके पास यदि 10 स्नातक नौकरी के लिए आते हैं, तो मात्र 3 ही अनिवार्य कुशलता पूरी करने योग्य होते हैं। प्रमुख उद्योग संगठन एसोचैम की एक रिपोर्ट की मानें तो देश में हर वर्ष दो लाख एमबीए, छः लाख से ज्यादा इंजीनियरिंग स्नातक निकलते हैं, लेकिन इनमें से एक चौथाई नौकरी के योग्य होते हैं। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 90 फीसदी स्नातक नौकरी पाने योग्य नहीं होते। इसका कारण है कि जहां आईटी, सेवा, मानव संसाधन, बीमा जैसे क्षेत्रों में 90 फीसदी नौकरियाँ व्यवसायिक एवं प्रबंधकीय रूप से दक्ष लोगों के लिए है, वहीं देश की कार्यशील आबादी के महज छः फीसदी को ही व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त होती है। इसके विपरीत दक्षिण कोरिया के 90 फीसदी, जापान के 80 फीसदी व जर्मनी के 75 फीसदी कामगारों को व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त होती है। ऐसे में उच्च शिक्षा के आयाम बढ़ाने के साथ–साथ प्रतिभा पलायन रोकना भी एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

बदलाव प्रकृति का नियम है और शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही। आज शिक्षा अपने परंपरागत स्वरूप से हटकर 'ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था' की ओर अग्रसर है। शिक्षा और रोजगार में अनन्य संबंध एवं तद् अनुसार मानव संसाधनों के साथ विकास दर की ऊंचाइयों को छूना इसका ध्येय है। जैसे–जैसे सेवा क्षेत्र का विस्तार हो रहा है, वैसे–वैसे तमाम नए उद्यम भी सामने आ रहे हैं, इनके लिए दक्ष मानव संसाधन की आवश्यकता है और साथ ही इस काम के लिए इन्हें विशेष कौशल प्रशिक्षण देने की भी आवश्यकता है। इसमें कोई शक नहीं कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र होने के साथ–साथ सबसे बड़ा बाजार भी मुहैया कराता है ऐसे में शिक्षा को उत्पादन से जोड़ वांछित सार्थक और लाभदायक योगदान की अपेक्षा की जा रही है एक तरफ शिक्षा संस्थाओं में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एवं गुणवत्ता बनाने हेतु विदेशी विश्वविद्यालयों को बुलाने की योजना चल रही है वहीं इग्नू जैसी संस्थाएं देश के कोने–कोने में दूरस्थ शिक्षा को आसान कर रहे हैं। इस इच्छा ने भी इस संबंध में महत्वपूर्ण योगदान दिया है आज हमारे पास वर्चुअल लैब और प्रौद्योगिकी सम्पन्न केन्द्र है जिनके जरिए ना केवल शिक्षा पहुंचाई जा सकते हैं बल्कि दक्षता उन्नयन कार्यक्रम और तकनीकी शिक्षा मुहैया की जा सकती है। यह इसलिए जरूरी है क्योंकि इतनी बड़ी संख्या में कॉलेज खोलना और इनके लिए बुनियादी संरचना का विकास करना संभव नहीं है।

गौरतलब है कि शिक्षा–साहित्य–संस्कृति की त्रिवेणी ही किसी राष्ट्र को उन्नत बनाती है। शिक्षा को उत्पादकता से जोड़ कर देखना गलत नहीं है बशर्ते परिवार, परिवेश, पर्यावरण और संस्कृति से इसे बिरत् न किया जाए। पारिवारिक मूल्यों के प्रति निष्ठा समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की जानकारी पर्यावरण के प्रति सचेतना आध्यात्मिक पुरुषों स्वतंत्रता सेनानियों एवं राष्ट्रीय वीर पुरुषों के जीवन आदर्शों के बारे में प्रेरणात्मक पहलू जैसे तमाम तत्वों के बिना शिक्षा का उद्देश्य अधूरा है। 2020 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का सपना देखने वाले पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने बहुत खूबसूरत शब्दों में लिखा कि जब हृदय में शुद्धता हो तो चरित्र में सुंदरता आ जाती है या यदि चरित्र सुंदर हो तो परिवार में समरसता होती है। राज्यसभा की शिक्षा संबंधी याचिका समिति द्वारा वर्ष 2009 में प्रस्तुत वक्तव्य गौरतलब है – विज्ञान–सम्मत स्वास्थ्य शिक्षा, नैतिक शिक्षा, व्यक्तित्व एवं चरित्र निर्माण, पर्यावरण के प्रति जागरूकता हेतु उचित एवं आयु विशिष्ट पाठ्यक्रम तैयार किया जाए।

शिक्षा का स्वरूप कुछ भी हो, पर सब के लिए शिक्षा बेहद जरूरी है। सामाजिक व आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका है। शिक्षा व्यक्ति के भौतिक और नैतिक दोनों प्रकार के विकास का आधार तैयार करती है। यह हमारी संवेदना और अवधारणाओं को परिष्कृत बनाती है, जिससे मन–मस्तिक को स्वतंत्रता और उनके बीच तालमेल स्थापित करती है और वैज्ञानिक दृष्टि के विकास में सहायता मिलती है। शिक्षा ज्ञान, बुद्धि और कौशल को समृद्ध बनाती है। प्राथमिक स्तर पर स्कूलों में संसाधनों अध्यापकों की सुनिश्चितता, उच्च स्तर पर ज्ञान में प्रवीणता हासिल करने के साथ–साथ नए विचारों व सिद्धांतों का उद्भव एवं व्यावहारिक जीवन में उनका प्रयोग भी अपेक्षित है। तमाम नियम–कानूनों के बावजूद परीक्षाओं में धांधली, विद्यार्थियों का शोषण एवं जातिवादी राजनीति से शैक्षणिक परिसरों की मुक्ति ही अन्ततः भारत को एक सुखी–समृद्ध–शिक्षित राष्ट्र बना सकेगा। भारतीय परिपेक्ष में प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के शब्द आज भी प्रासंगिक है – भारत को अपने लिए ऐसी संस्कृति व शिक्षा का चयन करना होगा जो कि प्राचीन संस्कृति की उद्यामता से प्रेरित हो एवं इसके साथ ही साथ वर्तमान मांगों की भी उपेक्षा न कर सके।'

आदि संसार निरामिष भोजी

– डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

संसार के सभी प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ आदिकालीन मनुष्य को निरामिष भोजी सिद्ध करते हैं। सृष्टि के आरम्भ में मानवों का भोजन फल, मूल, कन्द और अन्न आदि ही था। संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद 5/83/10 में स्पष्ट कहा गया है **'आजीवन ओषधीर्भोजनाय'** अर्थात् खाने के लिए औषधियाँ उत्पन्न की गई हैं। इसी प्रकार अथर्ववेद 6/140/2 में दांतों को लक्ष्य करके कहा – **'व्रीहिमत्तं यवमत्तमथो माषमथो तिलम्। एष वां भागो निहितो रत्नधेयाय.....।।''** अर्थात् दांतों का भाग या भोजन व्रीहि, यव, माष और तिल आदि हैं। पुरानी बाइबिल और कुरान आदि में लिखित आदम और हव्वा की कथा इसी सत्य को प्रकट करती है। (पं. युधिष्ठिर मीमांसक, वैदिक सिद्धान्त मीमांसा, रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत, हरियाणा) प्रथम संस्करण, 2033 विक्रमी)।

खुदा ने आदम, हव्वा और शैतान इन तीनों को स्वर्ग से गिरा कर मर्त्यलोक अर्थात् इस धरती पर भेज दिया। इतना ही नहीं, तीनों को अलग–अलग शाप भी दिए।

खुदा ने आदम को शाप देते हुए कहा – हे आदम! तुझे मैंने फल खाने से मना किया था, तू क्यों न माना, तू स्वर्ग से निकल और धरती पर जा। तुझे अब बराबर मिट्टी खोदकर, खेत जोतकर, अपना अन्न तैयार करना पड़ेगा। जमीन पर घोर परिश्रम करेगा, तभी तुझे खाने को मिलेगा और तब से आज तक मनुष्य को खेती करनी पड़ रही है। मनुष्य का स्वाभाविक भोजन खेती से पैदा किए गए पदार्थ हैं – वह शाकाहारी और अन्नाहारी है।

भारतीय साक्ष्य :– वायु पुराण में स्पष्ट और विस्तृत रूप से लिखा है कि आदि युग में मनुष्य पृथ्वी से उपजे अन्न ही खाते थे। इसका एक अंश आगे उद्धृत किया जाता है – **'पृथ्वीरसोद्भवं नाम आहारं ह्याहरन्ति वै'** (8/48)। अर्थात् उस सत्ययुग में पृथ्वीरस से उत्पन्न आहार पर मनुष्य निर्वाह करते थे। उस आदिकाल में पशुओं को मारकर खाना तो दूर रहा, यज्ञ में भी पशुवध नहीं किए जाते थे। इसका प्रमाण आयुर्वेद की चरक संहिता में मिलता है – **'आदिकाले खलु यज्ञेषु पशवः समालभनीयाः बभूवुर्नालम्भाय प्रक्रियन्ते स्म'** (चिकित्सा स्थान 19/4)। अर्थात् आदिकाल में यज्ञों में पशुओं का स्पर्श मात्र होता था। वे आलम्भ अर्थात् वध नहीं किए जाते थे।

महाभारत संहिता अनुशासन पर्व 177/54 और मत्स्य पुराण में भी यही तथ्य वर्णित है। डार्विन मतानुयायी लोगों की मिथ्या कल्पना है कि आदि मनुष्य आखेट करके अपना भोजन प्राप्त करता था। संसार का पुरातन इतिहास पदे–पदे इस मत का खण्डन करता है।

पृषघ्र काल में पशुबलि – पृषध्रकाल में यज्ञों में पशु मारे जाने लगे। (चरक संहिता, चिकित्सा स्थान। उग्रादित्य का कल्याणकारक, पृ. 724)। वासिष्ठ धर्मसूत्र अ. 21 भी द्रष्टव्य है। तब वृथा मांस भक्षण निषिद्ध था। महाभारत में दीर्घ जीवन प्राप्ति के उपदेश में लिखा है – **'वृथा मांसं नाश्नीयात्'।** वृथा मांस भक्षण आयु को न्यून करता है।

पंचतन्त्र, पूर्ण भद्र का पाठ, तन्त्र 3, पृ. 191 पर अजा का अर्थ व्रीहि करके यज्ञ में बकरे के वध का निषेध बताया है।

अन्य जातियाँ – यहूदी और यवन मानते थे कि आदि अर्थात् सुवर्ण युग में मनुष्य निरामिष भोजी था –

Among the Greeks and Semites, therefore, the idea of a Golden Age, and the trait that in that age man was vegetarian in his diet... (The Religion of the Semites, p. 303)

Man in his primitive state of innocence, lived at peace with all animals, eating the spontaneous fruits of the earth! अर्थात् यवन और यहूदी आदि लोग मानते थे कि सुवर्ण युग में मनुष्य केवल शाकाहारी था.....। मनुष्य सर्वथा निर्दोष था और सब पशुओं के साथ शान्ति का व्यवहार करता था। वह भूमि की स्वाभाविक उपज खाता था। इति।

गोमाँस वर्जन – जब लोग शिष्टाचार विहीन हो गए और माँस खाने लग पड़े, तब संसार की अनेक जातियाँ गोमांस खाना आचार के विरुद्ध समझती रहीं। हैरोडोटस (तत्रैव, पृ. 601) लिखता है –

Thus from Egypt as far as lake Tritonis.... Cows flesh however none of these tribes ever taste, but abstain from it for the same reason as the Egyptians, neither do they any of them breed swine. Even at Cyrene, the women think it wrong to eat the flesh of the cow,... अर्थात् ये जातियाँ गोमाँस का स्वाद भी कभी नहीं लेतीं। सिरीन स्त्रियाँ भी गोमांस खाना अधर्म समझती हैं। कभी यह भाव सारे संसार में विद्यमान था। उत्तरकाल में मनुष्य असभ्य होता गया और इन श्रेष्ठ गुणों का परित्याग करता गया।

ईसा के शिष्य निरामिष भोजी – ईसा जी के सब शिष्य और अनुयायी भिक्षु पहले निरामिष भोजी थे। अल मासूदी (हिजरी 330 = विक्रम संवत् 998) लिखता है –

"The disciples of the Messiah are seventy two in number, besides whom twelve more have to be counted...." "of all the Christian monks, those of Egypt are the only ones who eat meat, because Mark permitted them to do so." (इंडियन अण्टिक्वेरि, भाग 18, अक्टूबर, सन् 1889, पृ. 315 पर मेजर जे.एस. किंग का मूल अरबी ग्रन्थ से अंग्रेजी अनुवाद, अरबी ग्रन्थ किताब अल मरुज–उल–जहब व मुआविन–अल–जौहार) अर्थात् सारे ईसाई भिक्षुओं में से केवल मिश्र के भिक्षु मांस खाते हैं, क्योंकि ईसा शिष्य मार्क ने उन्हें इस बात की आज्ञा दी थी। इति।

पशु बलियाँ – जब भारतवर्ष में कुछ पतन हो गया और पशु–बलियां यज्ञों का अंग बन गईं तब संसार के अन्य देशों ने भी इस प्रथा का अनुसरण किया। पर वृथा मांस भक्षण से बचे रहने का वे फिर भी यत्न करते रहे। हैरोडोटस लिखता है – The Egyptian priests make it a point of religion not to kill any live animal except those which they offer in sacrifice. अर्थात् मिश्र के पुरोहितों का धार्मिक सिद्धान्त है कि वे यज्ञ के अतिरिक्त किसी जीवित पशु को नहीं मारते।

– 'अग्निर्ज्योति' चाणक्यपुरी, अमेठी, उत्तर प्रदेश–227405
मो.:– 09415185521

द – दमन, दान, दया

– महात्मा आनंद स्वामी सरस्वती

प्रजापति के पास एक बार देवता, असुर और मनुष्य तीनों इकट्ठे होकर पहुंचे। प्रजापति ने पूछा – कहो भाई! कैसे आना हुआ?

देवताओं, असुरो और मनुष्य ने कहा हम उपदेश लेने आए हैं।

प्रजापति ने कहा अच्छी बात है, परंतु मैं उपदेश दूंगा उस अवस्था में जब तुम 30 वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचर्य धारण करके मेरे पास आओ।

30 वर्ष तक देवता, असुर और मनुष्य ब्रह्मचर्य का पालन करते रहे। 30 वर्ष के पश्चात फिर प्रजापति के पास आए। प्रजापति ने पूछा – क्यों भाई, मेरी आज्ञा का पालन हुआ?

प्रजापति ने कहा – अच्छी बात है। आगे बढ़ो और सुनो मेरा उपदेश।

सबसे पहले देवता आगे बढ़े। प्रजापति ने ऊँची आवाज में कहा – 'द' और मौन हो गए।

अब देवता खड़े हैं। देख रहे हैं उनकी ओर, कुछ भी बोले नहीं।

प्रजापति ने पूछा – क्यों भाई देवताओं! तुमने मेरे उपदेश का अर्थ समझा।

देवताओं ने कहा – जी महाराज! आपने कहा 'द' अर्थात दमन करो। आपने हमें दमन करने, इन्द्रियों को बस में रखने का आदेश दिया है।

प्रजापति बोले – ठीक समझे हो तुम। यही तुम्हें करना है। यही करने से तुम्हारा कल्याण होगा।

तब मनुष्य आगे बढ़े। प्रजापति ने उनकी ओर देखते हुए कहा – 'द' और चुप हो गए।

मनुष्यों ने कहा – धन्य हो प्रजापति! आपका उपदेश बहुत उत्तम है।

प्रजापति ने पूछा – क्या है मेरा उपदेश?

मनुष्यों ने कहा – आपका उपदेश है – 'द' अर्थात दान। आपने हमें दान देने का उपदेश दिया।

प्रजापति बोले – ठीक समझे हो तुम। जाओ, दान देने में ही मनुष्य का कल्याण है। अब दूसरों को आगे आने दो।

असुर आगे बढ़े तो प्रजापति ने पुनः कहा – 'द' और चुप हो गए। असुर हाथ जोड़कर खड़े रहे। प्रजापति ने पूछा – क्यों भाई! मेरे उपदेश का अर्थ तुमने समझा?

असुरों ने कहा – जी महाराज! आपने हमें 'द' अर्थात् दया का उपदेश दिया है। आपने कहा कि हम प्राणी मात्र पर दया करें।

प्रजापति बोले – ठीक समझे तुम। यही है मेरा उपदेश तुम्हारे लिए।

इस प्रकार एक ही 'द' अक्षर से प्रजापति ने देवता, मनुष्य और असुरों तीनों को उपदेश दिया। देवताओं के लिए दमन, मनुष्यों के लिए दान और असुरों के लिए दया। एक ही अक्षर का तीनों के लिए भिन्न–भिन्न अर्थ हो गया।

देवता उस समय देवता बनता है जब वह अपनी इंद्रियों का दमन करें, उन्हें बस में रखें अन्यथा उसका देवत्व समाप्त हो जाता है। मनुष्य उस समय मनुष्य बनता है, जब तक वह स्वयं दया का दूसरों को दान दे, दूसरों की रक्षा करें दूसरों की सहायता करें, नहीं तो उसकी मानवता पशुता में बदल जाएगी। और असुर सही अर्थों में उस समय असुर है, जब वह अपनी शक्ति को दूसरों पर दया करने के लिए उन्हें संकटों से बचाने के लिए और उन्हें आपत्ति में सहायता देने के लिए प्रयोग करें, नहीं तो वह असुर नहीं राक्षस बन जाएगा।

सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि कृत सर्वशुद्ध द्वितीय संस्करण द्वारा मुद्रित है अर्थात् 37वां संस्करण के अनुसार प्रकाशित है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश सर्वशुद्ध, द्वितीय संस्करण के अनुसार 20x30 के 8वें के बड़े साईज में कम्प्युटर द्वारा मुद्रित होकर तैयार है। पृष्ठ संख्या 432 रेक्सिन वाली जिल्द, लेमिनेशन वाला आकर्षक टाईटिल है।

प्रत्येक अक्षर मोतियों जैसा पठनीय है। कागज भी मजबूत और ग्लेज है।

मूल्य – अजिल्द – 160/– रुपये, सजिल्द – 225/– रुपये, डाक से मंगाने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।

बुक मंगाते समय यदि आप सीधे राशि भेजना चाहते हैं तो निम्न खाते में राशि भेजकर दूरभाष पर सूचित करें :–

मधुर प्रकाशन
खाता संख्या–0127002100058167
IFSC Code No.- PUNB0012700
पंजाब नेशनल बैंक, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

मधुर प्रकाशन
2804, गली आर्य समाज,
बाजार सीताराम, दिल्ली–110006
मो.:–9810431857

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, गौतमनगर नई दिल्ली का 85वाँ वार्षिक समारोह एवं 39वाँ चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, गौतमनगर नई दिल्ली का 85वाँ वार्षिक समारोह एवं 39वाँ चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ 3 दिसम्बर से 16 दिसम्बर, 2018 तक भव्य सम्मेलनों के साथ सम्पन्न हो रहा है। इस अवसर पर प्रतिदिन 7 से 10 बजे तक तथा सायं 3 से 6 बजे तक यज्ञ होगा। समारोह में शास्त्र स्मरण प्रतियागिता सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, कवि सम्मेलन सहित अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा के पद को डॉ. महावीर पूर्व कुलपति उत्तखण्ड संस्कृत विद्यालय सुशोभित करेंगे। श्री डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री, आर्य नेता ठा. विक्रम सिंह, चौ. मामचन्द्र जी तंवर, लाला मोहन लाल जी चोपड़ा, श्री आर. एन. मित्तल, श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, श्री सूरज गोयल, श्री हेमन्त गुप्ता, श्री रामनाथ सहगल, कै. रुद्रसेन आर्य सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, डॉ. रघुवीर वेदालंकार सहित अनेकों विद्वान्, शिक्षाविद् तथा आर्यनेता अपने विचारों से श्रोताओं को लाभान्वित करेंगे। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर आयोजन को सफल बनायें।

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

ऋग्वेद पारायण यज्ञ के साथ मनाया स्थापना दिवस

जयपुर : महिला आर्य समाज मानसरोवर ने ऋग्वेद पारायण यज्ञ के साथ 24वाँ स्थापना दिवस मनाया। 11 से 14 अक्टूबर, 2018 तक चले यज्ञ के ब्रह्मा कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के स्वामी विदेह योगी रहे तथा वेद पाठी श्रीमती श्रुति आर्या (जयपुर) एवं श्रीमती श्रुति आर्या (दिल्ली) रहीं। युवा भजनोपदेशक मेरठ के संदीप आर्य ने मधुर भजनों की अमृत वर्षा की। कुशल मंच संचालन डॉ. सुमित्रा आर्या का रहा। आयोजन के दौरान सर्वश्री जवाहर वधवा, मोहन लाल लहाना, श्रीमती सुधा मित्तल, सरोज गुप्ता, सन्तोष नारायण, श्री सुनील अरोड़ा के भी मधुर भजन होते रहे। उल्लेखनीय है कि जयपुर के वैदिक विद्वान् डॉ. कृष्णपाल सिंह रचित पुस्तक का लोकार्पण माननीय लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह कोठारी के कर कमलों द्वारा हुआ। पुस्तक का नाम यज्ञ कुंड मंडप शिल्प सर्वस्व है।

पूर्णाहुति एवं समापन सत्र में विशिष्ट जन सर्वश्री सत्यव्रत सामवेदी, मोहन लाल गोयल, डॉ. रामपाल विद्या भास्कर आचार्य उषर्बुध की गरिमामय उपस्थिति रही। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश ने निन्दा प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें उदयपुर पुलिस द्वारा आर्य साहित्य विक्रेता लाजपत राय की गिरफ्तारी को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला बताया गया। सभी उपस्थित जनों ने पुस्तक का समर्थन किया एवं सत्याग्रह के लिए भी उद्यत रहने का निर्णय लिया।

महिला आर्य समाज की प्रधाना सरोज कालरा एवं प्रधान अर्जुन देव कालरा ने आयोजन में उपस्थिति दर्ज कराने वालों का आभार व्यक्त किया। ऋषि लंगर के साथ सभा विसर्जित हुई। **– ईश्वर दयाल माथुर, उपप्रधान**

आर्य समाज हापुड़ द्वारा भारतीय सनातन संस्कृति को बचाने के लिए धरना

आर्य समाज हापुड़ के प्रधान श्री आनन्द प्रकाश आर्य के नेतृत्व में आर्य महिला एवं पुरुषों ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा धारा–377 व 497 को समाप्त कर भारतीय सनातन संस्कृति को समाप्त करने के लिए दिये गये निर्णय के विरोध में एक ज्ञापन माननीय प्रधानमंत्री भारत सरकार के नाम उप–जिलाधिकारी, हापुड़ को दिया।

श्री आनन्द प्रकाश आर्य ने बताया कि समलैंगिकता को वैध ठहराया जाना तथा पुरुष–महिला द्विपक्षीय सहमति से होने वाले काम सम्बन्ध को छूट देकर सर्वोच्च न्यायालय ने अपने दोनों फैसलों से भारत की सनातन संस्कृति पर कुठाराघात किया है। आर्य समाज इसका पुरजोर विरोध करता है।

अतः आर्य समाज की भारत सरकार से विनम्र माँग है कि जनहित में सर्वोच्च न्यायालय के इन समाज विरोधी और अमानवीय फैसलों के विरुद्ध संसद से कानून स्वीकृत कराकर विश्व में सर्वोच्च भारतीय सनातन संस्कृति की रक्षा कर कृतार्थ करें।

महिला प्रधान माया आर्या, मंत्राणी अलका अग्रवाल ने भी अपने विचार रखकर महिला समाज का रोष व्यक्त किया। धरने में आनन्द प्रकाश आर्य, सुरेन्द्र गुप्ता कबाड़ी, मंगलसेन, वीना आर्या, पुष्पा आर्या, अलका अग्रवाल, प्रतिभा भूषण, शकुन्तला आर्या, बीना आर्या, माया आर्या, सुरेश सिंहल, राधारमण आर्य, सुन्दर लाल आर्य (जिला मंत्री), विजय शर्मा, अनिल कसेरे, शिव कुमार, सुरेन्द्रनाथ आदि सम्मिलित रहे।

– आनन्द प्रकाश आर्य, प्रधान
मो.:–9837086799

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज जवाहर नगर का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव रविवार दिनांक 25 नवम्बर, 2018 को सम्पन्न हुआ जिसमें पं. बालकृष्ण जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में चल रहे मंगल यज्ञ की पूर्णाहुति में यजमानों ने बड़ी श्रद्धा से आहुतियां अर्पित की। उत्सव में ज्योति प्रज्ज्वलन श्रीमती पूजा एवं श्री बृजेश पुरी ने किया व ध्वजारोहण अमर उद्योग के मालिक श्रीमती नीलम व अरुण थापर जी द्वारा किया गया। प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशिका अंजलि आर्या एवं पं. राजेन्द्रव्रत जी ने मनोहर भजन प्रस्तुत कर आर्यजनों को आनन्दित किया। आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् स्वामी सम्पूर्णानन्द जी महाराज ने अपने सम्बोधन में कहा कि संसार की सभी सामाजिक व धार्मिक समस्याओं का समाधान केवल मात्र वेद द्वारा ही किया जा सकता है। उन्होंने वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया।

इस अवसर पर देवकी देवी जैन मेमोरियल कॉलेज फार वुमैन, लुधियाना की पांच छात्राओं को बी.ए. फाइनल की परीक्षा में संस्कृत विषय में अपने महाविद्यालय में प्रथम पांच स्थान प्राप्त करने पर श्रीमती सुमित्रा देवी जी बस्सी द्वारा आरक्षित राशि से पारितोषिक एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

इस उत्सव में आर्य समाज के प्रधान डॉ. विजय सरीन, महामंत्री श्री अनिल कुमार, उपप्रधान श्री बृजमोहन अरोड़ा, श्री राजेन्द्र बेरी, कोषाध्यक्ष श्री राजीव गुप्ता, श्री अजय मोंगा, श्री संजीव गुप्ता, श्री अनुपमा गुप्ता, श्री ओम प्रकाश गुप्ता, स्वर्ण कौर तथा ममता शर्मा के साथ–साथ लुधियाना की समस्त आर्य समाजों के सदस्यों व अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठाया।

– विजय सरीन, प्रधान

दो दिवसीय स्थापना दिवस का आयोजन

आर्ष शिक्षा हेतु निर्मित वैदिक श्रीमद्दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल (नवलपुर, बिजनौर) में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष 24 एवं 25 नवम्बर, 2018 को दो दिवसीय स्थापना दिवस का आयोजन किया गया।

जिससे 24 नवम्बर को प्रथम सत्र में प्रातः यज्ञ के माध्यम से राष्ट्र कल्याण एवं अभ्युदय की भावना से वेद मंत्रों के साथ यज्ञ के ब्रह्मा आचार्या सविता आर्या व आचार्या दिव्य किरण शास्त्री द्वारा कार्यक्रम आरम्भ हुआ। प्रथम सत्र के मुख्य अतिथि अटल राय डी.एम. (बिजनौर) के कर कमलों द्वारा ओ३म् ध्वजारोहण संस्कृत गीत के साथ सम्पन्न किया गया। इसके अन्तर्गत विशिष्ट अतिथि सौरभ सिंहल एवं अध्यक्ष श्री पवन विश्नोई (मेरठ) आदि ने मंच की शोभा बढ़ाई।

द्वितीय दिवस 25 नवम्बर को समापन सत्र में मुख्य अतिथि रवि बहल (दिल्ली) एवं विशिष्ट अतिथि पतराम त्यागी व सूची सिंह विधायक भाजपा बिजनौर एवं भूपेन्द्र वकील तथा मूर्धन्य विद्वान ओम प्रकाश शास्त्री जी आदि की गरिमामय उपस्थिति ने मंच को सुशोभित किया। मंच संचालन गुरुकुल प्रबन्धक सुशील कुमार त्यागी तथा दिव्य किरण आर्या ने सुचारू रूप से सम्पन्न किया। इस प्रकार दो दिवसीय महोत्सव कन्याओं के शौर्यपूर्ण कार्यक्रम लाठी, डम्बल स्वागत व शस्त्राभिवादनम् द्वारा समापन किया गया।

– सुशील कुमार त्यागी, मो.:–9837962621

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य

'श्रीमद्दयानन्द प्रकाश'
लेखक–स्वामी सत्यानन्द,
मूल्य 150 रुपये, पृष्ठ–455

'मनुस्मृति'
भाष्यकार पं. तुलसीराम स्वामी,
मूल्य 200 रुपये, पृष्ठ–595

उपरोक्त दोनों पुस्तकें बढ़िया कागज व प्रिंटिंग के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली–2 पर 25 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध हैं। डाक से मंगाने पर एक प्रति के हिसाब से 25 रुपये डाक व्यय अतिरिक्त देना होगा।

आर्य समाज बड़ी छानी, जिला–हनुमानगढ़, राजस्थान के वार्षिकोत्सव में

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ विशेष उद्बोधन

प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री कैलाश कर्मठ एवं श्री रामनिवास आर्य के भजनों की रही धूम

आर्य समाज बड़ी छानी, जिला–हनुमानगढ़, राजस्थान का वार्षिकोत्सव 28 से 30 नवम्बर, 2018 को बड़े उत्साह एवं उमंग के साथ सम्पन्न हो गया। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी गांव में विशाल शोभा यात्रा निकालकर जन–जागृति का सुन्दर प्रदर्शन किया गया। शोभा यात्रा में आर्य समाज के अन्तर्गत चल रहे विद्यालय के छात्र–छात्राओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया तथा सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने सम्मिलित होकर शोभा यात्रा को सफल बनाया। इस तीन दिन के उत्सव में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, गुरुकुल धीरणवास के कुलपति स्वामी सर्वदानन्द जी, कन्या गुरुकुल डोभी के कुलपति श्री बलजीत सिंह आर्य, आर्य समाज माडल टाउन के धर्माचार्य श्री सूर्यदेव वेदांशु, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री रामनिवास आर्य तथा श्री कैलाश कर्मठ आदि ने अपने भजनों एवं व्याख्यानों से श्रोताओं का ज्ञान वर्द्धन किया।

पाखण्ड एवं अन्धविश्वास के विरुद्ध विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने नाटक एवं गीतों के द्वारा कार्यक्रम

दिखाकर लोगों में जागृति पैदा की। 29 नवम्बर, 2018 को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी उत्सव में सम्मिलित हुए। स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोन हुआ जिसे सुनकर आर्य समाज के पदाधिकारियों एवं अन्य स्थानों से पधारे हुए आर्यजनों ने स्वामी जी से आग्रह किया कि वे इस क्षेत्र के लिए अलग से समय दें जिससे यहां पर लोगों में विशेष उत्साह पैदा हो सके। स्वामी जी के व्याख्यान से सभी लोग अत्यन्त प्रभावित हुए। यह उत्सव 30 नवम्बर, 2018 को सम्पन्न हुआ। उत्सव की व्यवस्था में आर्य समाज के प्रधान श्री रामेश्वर लाल आर्य, मंत्री श्री जयवीर लांबा, श्री नाथूराम मान पूर्व सरपंच, श्री विजयपाल आर्य, श्री लाधूराम आर्य आदि ने उत्सव को सफल बनाने में विशेष पुरुषार्थ किया। कर्मठ युवा संगठनकर्ता श्री जगतपाल आर्य ने सम्पूर्ण कार्यक्रम के संयोजन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।